धर्म - रक्षक
कौन ?

प्रिय बहाई मित्र

अल्ला अबहा

आपकी निष्ठा किनके प्रति है ?

धर्म रक्षक विहीन (Heterodox), छलकपट पर आधारित एवं संपूर्ण विश्व में प्रभू धर्म के प्रेमियों को पथ भ्रष्ट करने वाले विश्व न्याय मन्दिर के प्रति या संविदा केन्द्र अब्दुल बहा और प्रथम धर्मरक्षक शोगी आफेन्दी की इच्छा के प्रति ?

यदि आप अब्दुल बहा की 'वसीयत' (Will & Testament) का अध्ययन करें तो स्वयं देखेंगे कि अब्दुल बहा का कथन है –

"धर्म रक्षक के लिए अनिवार्य है कि वे अपने जीवन काल में दूसरा धर्मरक्षक (अपना उत्तराधिकारी) नियुक्त करें"

क्या आप यह मानने को तय्यार हैं कि हमारे प्रथम धर्मरक्षक शोगी आफेन्दी ने संविदा केंद्र अब्दुल बहा की इच्छाओं के विपरीत कार्य करते हुए अपने बाद कोई दूसरा धर्मरक्षक नियुक्त नहीं किया नहीं ऐसा असम्भव है ।

जैसा कि हमारे ज्ञान में है कि संविदा केंद्र अब्दुल बहा ने अपनी वसीयत में अपने पौत्र शोगी आफेन्दी को प्रभू धर्म का प्रथम रक्षक नियुक्त किया ।

शोगी आफेन्दी ने १९५१ में जब विश्व में नौ (९) राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभायें स्थापित हो चुकी तो, अन्तर्राष्ट्रीय बहाई

मण्डल की स्थापना की और प्रभू धर्म के अनुयाइयों को यह संदेश दिया कि यह अंतर्राष्ट्रीय बहाई मण्डल भविष्य का विश्व न्याय मंदिर है। शोगी आफेन्दी ने एक वरिष्ठ अमरीकी बहाई मेसन रेमी जो धर्मभूजा भी थे, को इस बहाई मण्डल का अध्यक्ष नियुक्त किया।

इस प्रकार शोगी आफेन्दी ने मेसन रेमी को अपने बाद प्रभू धर्म में सर्वोच्च स्थान से सुशोभित करते हुए उन्हें मौखिक रुप से अपना उत्तराधिकारी और प्रभू धर्म का दूसरा धर्मरक्षक नियुक्त किया।

सन् १९५७ में शोगी आफेन्दी की अकस्मात लन्दन में देहवासन हो गया और इस तरह वे मेसन रेमी के दूसरे धर्मरक्षक होने के सम्बन्ध कोई लिखित सन्देश न छोड़ सके। तुरन्त ईरानी धर्मभुजाओं ने एक षड्यन्त्र रचा और एक गोपनीय बैठक में यह फैसला किया कि धर्मरक्षता के द्वार को सदा के लिए बन्द कर दिया जाए और उन लोगों ने बहाई विश्व में यह सन्देश दिया कि धर्मरक्षक का पद अब समाप्त हो गया है।

मेसन रेमी ने पहले इन धर्मभुजाओं को बहुत समझाया - बुझाया और उनसे कहा कि प्रभू धर्म को धर्मरक्षक से वंचित न करें। परन्तु उन लोगों ने एक न सुनी और बहाइयों को ऐसे अंधकार की तरफ ढकेल दिया जहाँ से उनका वापस आना बहुत कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था।

सन १९६० में मेसन रेमी ने अपने को द्वितीय धर्मरक्षक

घोषित करके अब्दुल बहा और शोगी आफेन्दी की सत्यता को बचा लिया ।

५ दिसम्बर १९६१ में मेसन रेमी ने एक पत्र द्वारा श्री जोअल मैरेन्जेला को बहाई धर्म का तृतीय धर्म रक्षक नियुक्त किया और उन्हें प्रभू धर्म की बागडोर संभालने का आमन्त्रण दिया तब से आज तक जोअल मैरेन्जेला धर्मनिष्ट (Orthodox) बहाइयों का मार्गदर्शन करते आ रहे हैं । १९९२ में धर्मनिष्ट बहाइयों को एक अत्यन्त सुखद सफलता हुई और भारत की राजधानी दिल्ली में धर्मनिष्ट बहाइयों की राष्ट्रीय बहाई परिषद स्थापित की गयी ।

आप अपना संबन्ध धर्म विरुध्द, धर्मरक्षक विहीन संस्था से तोड़ लें और धर्मनिष्ट बहाइयों में आ मिलें और सच्चे प्रभू धर्म की सेवा में लग जाएँ ।

यदि आपको अधिक जानकारी प्राप्त करना हो तो इस पते पर सम्पर्क करे ।

Provisional National
Baha'i Council of India
Vasai Road
District: Thane: 401207
Maharashtra
INDIA